फेक न्यूज़ की पहचान करने वाले टूल्स (Tools):
एक आम नागरिक या शोधकर्ता के रूप में, हम सूचना की सत्यता जाँचने के लिए किन तकनीकी उपकरणों का उपयोग कर सकते हैं?
सूचना के इस युग में 'फेक न्यूज़' और 'डीपफेक' की पहचान करना एक आवश्यक कौशल बन गया है। एक आम नागरिक या शोधकर्ता के रूप में, आप अपनी जिज्ञासा और कुछ मुफ़्त तकनीकी उपकरणों (Tools) की मदद से सूचना की सत्यता जाँच सकते हैं।
यहाँ कुछ प्रमुख टूल्स और तकनीकें दी गई हैं:
1. विज़ुअल वेरिफिकेशन (फोटो और वीडियो की जाँच)
अक्सर पुरानी तस्वीरों या वीडियो को गलत संदर्भ में साझा किया जाता है। इसकी जाँच के लिए निम्नलिखित टूल्स उपयोगी हैं:
* Reverse Image Search (Google/Yandex/TinEye): किसी फोटो को गूगल या यांडेक्स पर अपलोड करके आप यह जान सकते हैं कि वह इंटरनेट पर पहली बार कब और कहाँ दिखाई दी थी।
* InVID / WeVerify: यह शोधकर्ताओं के लिए एक बेहतरीन 'ब्राउज़र एक्सटेंशन' है। यह वीडियो को की-फ्रेम्स (Key-frames) में तोड़ देता है, जिससे आप वीडियो के छोटे हिस्सों को रिवर्स सर्च कर सकते हैं।
* FotoForensics: यह टूल 'Error Level Analysis' (ELA) का उपयोग करता है जिससे यह पता चलता है कि फोटो के किस हिस्से के साथ छेड़छाड़ की गई है या उसे एडिट किया गया है।

2. सोशल मीडिया और वेबसाइट की सत्यता

किसी सोशल मीडिया अकाउंट या वेबसाइट के पीछे की सच्चाई जानने के लिए इनका उपयोग करें:

* Who.is: यह आपको बताता है कि किसी वेबसाइट का मालिक कौन है और वह डोमेन कब रजिस्टर्ड हुआ था। अगर कोई 'न्यूज़' वेबसाइट हाल ही में बनी है, तो वह संदिग्ध हो सकती है।

* Botometer: यह ट्विटर (X) अकाउंट्स की जाँच करता है और स्कोर देता है कि वह अकाउंट किसी असली इंसान का है या कोई 'बॉट' (ऑटोमेटेड प्रोग्राम) है।

3. भारतीय संदर्भ में फैक्ट-चेकिंग वेबसाइट्स

भारत में कई ऐसी संस्थाएं हैं जो विशेष रूप से क्षेत्रीय भाषाओं और भारतीय मुद्दों पर काम करती हैं:

संस्था	विशेषता
Alt News	गहरी पड़ताल और तकनीकी विश्लेषण के लिए प्रसिद्ध।
Boom Live	सोशल मीडिया पर वायरल होने वाले फेक संदेशों का खंडन।
Vishvas News	दैनिक जागरण समूह की पहल, जो कई भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है।
PIB Fact Check	भारत सरकार से जुड़ी योजनाओं और सूचनाओं की आधिकारिक पुष्टि।

4. डीपफेक (Deepfake) की पहचान

आजकल AI द्वारा निर्मित वीडियो और ऑडियो असली जैसे लगते हैं। इनकी पहचान के लिए:

* Deepware Scanner: यह एक ओपन-सोर्स टूल है जो वीडियो को स्कैन करके बताता है कि उसमें AI का इस्तेमाल हुआ है या नहीं।
* Intel’s FakeCatcher: यह रीयल-टाइम में रक्त प्रवाह (Blood flow) के संकेतों के आधार पर असली और नकली वीडियो में अंतर कर सकता है।

याद रखने योग्य बातें (Pro-Tips):

* URL की जाँच करें: अक्सर फर्जी वेबसाइट्स के URL असली जैसे दिखते हैं (जैसे www.bbc.com की जगह www.bbc-news.in)।
* स्रोत की पुष्टि: क्या यह खबर किसी अन्य प्रतिष्ठित मीडिया संस्थान ने भी कवर की है?
* दिनांक देखें: कई बार पुरानी खबरों को ताज़ा बताकर शेयर किया जाता है।